स्वामी विवेकानन्द का सेवा भाव : शिवसेवा से जीव सेवा

*मोनिका शर्मा

शोध सारांश

स्वामी विवेकानन्द प्रथम हिन्दू धर्म प्रचारक सन्यासी थे, जो देश–देशान्तरों में गए और जिन्होंने भारत के आध्यात्म एवं धर्म का संदेश विश्व को पुनः दिया। वह एक महान देश भक्त और समाज सुधारक के अतिरिक्त, राष्ट्रीय पुनरूत्थान की शक्तियों को संगठित एवं परिचालित करने वाले प्रथम व्यक्ति थे और उन्होंने अंग्रेजी शासन के आघात से विश्रृंखल्लित और पराभूत राष्ट्र के पुनः निर्माण का पथ प्रशस्त किया।

इसी प्रकार देश को उसके चेतना केन्द्र धर्म से परिचित कराते हुए उन्होंने अध्यात्मिक भारत की आधार शिला रखी और इस बात का दृढ शब्दों में प्रतिपादन किया कि धर्म और आध्यात्मिक जीवन के सहारे से ही इस भारतीय राष्ट्र को उसके लक्ष्य के अनुरूप एवं प्रभावशाली ढंग से संगठित किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– ''हमें ऐसे धर्म की आवश्यकता है, जिससे हम मनुष्य बन सके।''

स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक ज्ञान के अलावा मानव मात्र की सेवा को भी धर्म का अंग माना। उन्होंने गरीब, रोगी व दीनःदुखी लोगों में देवत्व का अंश बताते हुए उनकी सेवा को ही सच्ची ईश्वर की भक्ति बताया। उन्होंने भारत की उन्नति और विकास के लिए एक राष्ट्रीय आदर्श दिया – त्याग और सेवा का आदर्श।

अपने इसी सेवा के आदर्श को एक सामाजिक, संघबद्ध व सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए स्वामी विवेकानन्द ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की और भारत के नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा – ''मेरे युवकों! गरीब, विद्याहीनों व पददलितों के लिए सहानुभूति और संघर्ष के लिए मैं तुम्हारा आह्वान करता हूँ। प्रतिदिन, निरन्तर अधोगति की ओर बढते हुए असंख्य नर नारियों की उन्नति के लिए अपने समस्त जीवन को न्योछावर कर दो। तुमने पढा है, 'मातृदेवों भव, पितृदेवों भवे मै कहता हूं – दरिददेवों भवः, मुर्खदेवों भवः। यह जानो कि इनकी सेवा ही सर्वोत्कृष्ठ धर्म है। गंगा किनारे कुआं खोदने की क्या आवश्यकता है ? इन दीन दुखियों में ही भगवान है, दया से प्रेरित होकर दूसरों का भला करना अच्छा है पर भगवत भाव से भी सभी प्राणियों की सेवा करना इससे भी अच्छा है।''

स्वामी विवेकानन्द ने भारत में सर्वप्रथम रामकृष्ण मिशन के माध्यम से संगठित रूप में सामाजिक सुधार का कार्य एक व्यापक स्तर पर किया। स्वामी विवेकानन्द संसार के सम्मुख 'शिवज्ञान से जीवसेवा' रूपी युग धर्म को प्रस्तुत करके ही शान्त नहीं हुए, बल्कि उन्होंने इसकी व्यावहारिक रूपरेखा भी प्रदान की है। पात्रभेद से सेवा भौतिक, बौद्विक व आध्यात्मिक – इन तीनों प्रकार की हो सकती है। भारत में जहां निर्धनता तथा विद्याहीनता बहुत अधिक है, जहां प्रतिवर्ष बाढ व सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोपों से लाखों लोग पीडित होते है, वहां अन्नदान, वस्त्रदान, रोगियों को औषधिदान व अशिक्षितों को विद्यादान द्वारा सेवा करना ही परम धर्म है।

विदेशों में अन्न–वस्त्र की समस्या न होने पर भी आध्यात्मिक दान व धर्म–प्रचार की आवश्यकता है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द ने भारत में सेवाश्रमों व शिक्षण संस्थाओं तथा समय–समय पर राहत कार्यों का अनुष्ठान किया तथा विदेशों में भी केन्द्र स्थापित किये जिनके माध्यम से वेदान्त प्रचार हो सके। आज भी रामकृष्ण मिशन स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रदर्शित इन्हीं सिद्वान्तों के अनुसार कार्य कर रहा है। उनकी राष्ट्रीयता भी मानवता का ही एक रूप है।

स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि वास्तविक शिव की पूजा निर्धन और दरिद्र की पूजा है, रोगी और कमजोर की पूजा

है। भारत की एक मात्रा आशा उसकी जनता है, इसलिए उन्होंने 'सर्वजन हिताय–सर्वजन सुखाय' का मंत्र सबके सामने रखा और कहा – ''यदि तुम्हे भगवान की सेवा करनी है, तो मुनष्य की सेवा करों। वह भगवान ही रोगी मनुष्य दरिद्र मनुष्य और सब प्रकार के मनुष्य के रूप में हमारे सामने खड़ा है। सबको देव समझकर, भगवान समझकर उनकी सेवा करनी चाहिये।

स्वामी विवेकानन्द ने हमें बताया कि ईश्वर बाह्य आडम्बर से नहीं, अपितु दीन–हीन असहायों की सच्ची सेवा से प्रसन्न होता है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द भारत के पहले ऐसे आध्यात्मिक गुरू थे जिन्होंने निर्धनों पीडितों की सेवा को मानव के मूलभूत धार्मिक कर्तव्यों में से एक बताकर सेवा का एक नया ही पथ प्रशस्त किया।

उनके अनुसार ''देश के कल्याण के लिए जन साधारण का स्तर ऊंचा उठाना परम आवश्यक है। यदि हमारे कोटी–कोटी बन्धुगण दरिद्रता और अज्ञान में डूबे रहें तो हमारी उन्नति कैसे हो सकती हैं ? अतः धनिकों का यह कर्तव्य है कि जिस समाज से उन्हें धन मिला है उसे उसी की सेवा में अर्पित करे, जनसाधारण की दरिद्रता व अज्ञानता को दूर करने का सक्रिय प्रयास करें। जो लोग शिक्षत व विद्वान है, वे अपनी शिक्षा तथा विद्या के द्वारा अशिक्षित भाईयों की सेवा करे। उन्हें शिक्षा दे, उन्हें विद्यादान दे तथा उन्हें स्वावलम्बन की शिक्षा दे, पीडितों का उपचार कराये।

स्वामी विवेकानन्द के इन्हीं आदर्शों पर चलते हुए रामकृष्ण मिशन आज अपनी स्थापना के लगभग 120 वर्ष पश्चात भी देश–विदेशों में अपने विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से सेवा कार्यों का संचालन कर रहा है और देश के उत्थान व विकास में योगदान दे रहा है।

***Research Scholar**
Department of Political Science
University of Rajasthan, Jaipur

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 विवेकानन्द साहित्य खण्ड 5, अद्वेत आश्रम कोलकाता, पेज नं. 11

2 स्वामी ब्रह्मेशानन्द – स्वामी विवेकानन्द स्वरूप और सन्देश रामकृष्ण मठ, नागपुर– वर्ष 2013 पेज नं. 86–87

3 स्वामी विदेहात्मानन्द – स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान, प्रकाशन अद्वैत आश्रम, कोलकाता, वर्ष 2008, पेज नं. 138

4 स्वामी विवेकानन्द–भारत जागरण रामकृष्ण मिशन नई दिल्ली, वर्ष 2011 पृष्ठ 150।